चरवाहों की पुकार !!

IYRP 2026 INTERNATIONAL YEAR OF RANGELANDS AND PASTORALISTS 2026

ज्ञान विज्ञान का ज़माना है भाई, सुधर जाओ लोग कहते हैं,
कितना चलोगे ? कब तक चलोगे पुराने विचार पर, हमसे पूछा करते हैं,
तो सुनो.....

माना हम हैं विमुक्त, घुमन्तु चरवाहे, चलते नित्य पर्यन्त,
संरक्षित करते चारागाह, पशुधन, मनाते पर्व अनंत,
हम हैं अलबेले मतवाले, अपनी धुन के निराले,
सुबह शाम हो या हो दोपहरी, जंतु जगत के हम सजग हैं प्रहरी,
सूरज की आभा में सोने से चमकते, और रात में चाँदनी से छिटकते ॥

कितना अतुल्य एवं उत्कृष्ट है अपना भारत वर्ष,
देख यहाँ की जैवविविधता होता कितना हर्ष,
गऊ की गूँज है गाँव गाँव, बैल, भैंस की है खेतों में ठाँव,
भेड़ बकरी की चाल निराली, दूध, ऊन, माँस है देने वाली,
ऊँट है रेगिस्तान का जहाज, मैदान में है घोड़ों की टाप,
पर्वत पर गर्दभ के सुर, दूध में इनके विशेष हैं गुण,
प्रत्येक प्रजाति सुनाती अपना किस्सा,
इनकी हर एक नस्ल है जीवन का हिस्सा ॥

उन्नत भारत के प्रगतिशील युवा, तुम बैठे सुख की छाँव में,
बनाते योजनाएँ पशुधन की, ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं में,
गंभीर चिंतन जलवायु परिवर्तन का,
पशुओं के संरक्षण, संवर्धन का,
चिंता ना करो !

हम सचेत हैं पहले से, भविष्य के सृजन निर्माण में,
सदियों से यही तो कर रहे, बैठे पेड़ों की छाँव में ॥
जलवायु को हमने ही बदलते देखा, हमारे हर पशु में गुण है एक अनोखा,
समय रहते संभल जाओ, तुम भी हमको अपनाओ,
तुम भी हमको अपनाओ.....

डॉ. रेखा शर्मा, शालिनी यादव, डॉ. सुषमा प्रसाद, डॉ. सोनिका अहलावत,
डॉ. रीना अरोड़ा, डॉ. मोहन एन एच

कृषि जैव विविधता पर कंसोर्सिया अनुसंधान परियोजना
भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल

चरवाहों की पुकार……

ज्ञान विज्ञान का ज़माना है भाई, सुधर जाओ लोग कहते हैं,
कितना चलोगे ? कब तक चलोगे पुराने विचार पर, हमसे पूछा करते हैं,
तो सुनो....

माना हम हैं विमुक्त, घुमन्तु चरवाहे, चलते नित्य पर्यन्त,
संरक्षित करते चारागाह, पशुधन, मनाते पर्व अनंत,
हम हैं अलबेले मतवाले, अपनी धुन के निराले,
सुबह शाम हो या हो दोपहरी, जंतु जगत के हम सजग हैं प्रहरी,
सूरज की आभा में सोने से चमकते, और रात में चाँदनी से छिटकते ।।

कितना अतुल्य एवं उत्कृष्ट है अपना भारत वर्ष,
देख यहाँ की जैवविविधता होता कितना हर्ष,
गऊ की गूँज है गाँव गाँव, बैल, भैंस की है खेतों में ठाँव,
भेड़ बकरी की चाल निराली, दूध, ऊन, माँस है देने वाली,
ऊँट है रेगिस्तान का जहाज, मैदान में है घोड़ों की टाप,
पर्वत पर गर्दभ के सुर, दूध में इनके विशेष हैं गुण,
प्रत्येक प्रजाति सुनाती अपना किस्सा,
इनकी हर एक नस्ल है जीवन का हिस्सा ।।

उन्नत भारत के प्रगतिशील युवा, तुम बैठे सुख की छाँव में,
बनाते योजनाएँ पशुधन की, ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं में,
गंभीर चिंतन जलवायु परिवर्तन का,
पशुओं के संरक्षण, संवर्धन का,
चिंता ना करो !

हम सचेत हैं पहले से, भविष्य के सृजन निर्माण में,
सदियों से यही तो कर रहे, बैठे पेड़ों की छाँव में ।।
जलवायु को हमने ही बदलते देखा, हमारे हर पशु में गुण है एक अनोखा,
समय रहते संभल जाओ, तुम भी हमको अपनाओ,
तुम भी हमको अपनाओ……

डॉ. रेखा शर्मा, शालिनी यादव, डॉ. सुषमा प्रसाद, डॉ. सोनिका अहलावत, डॉ. रीना अरोड़ा, डॉ. मोहन एन एच
आईसीएआर-राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल
कॉपीराइट@आईसीएआर-एनबीएजीआर

Translation

This poem, originally in Hindi, entitled *Charwahon ki Pukaar*, is a beautiful tribute to the pastoralist community and their vital role in biodiversity. It was created for the International Year of Rangelands and Pastoralists 2026.

The Call of the Shepherds.....

This is the age of science, friend; mend your ancient ways…people say,
How far will you wander? How long will you let old thoughts lead the day?
They question our path, they doubt our view,
So, listen; we have an answer for you…

We are the unchained, the nomads of the earth, walking without end,
The keepers of the grazing lands, on whom the herds depend
In the rhythm of the seasons, we find our sacred rite,
Shining like gold in the morning sun, and silver in the moon's light
Be it the heat of the noon or the cool of the haze,
We are the sentinels of the wild, guarding the kingdom all our days.

How vast and peerless is this land, this India we call home,
What joy to see the living web wherever we may roam!
From the lowing cows in the village square to the buffalo in the shade,
To the sheep and goats whose wool and milk have kept the world arrayed
The camel, majestic ship of sand; the horse, the thunder of the plain
Even the donkey's mountain song speaks of a hidden gain,
Every species tells a tale, every breed a thread of life,
Woven through the centuries, surviving through the strife…

O progressive youth of a rising nation, sheltered in your ease,
Drafting plans for the living world from high-rise balconies,
You ponder on the changing skies and how the climate veers,
Seeking ways to save the herds through spreadsheets and through fears…

But do not worry! We have been the builders since the dawn of history's light,
Seated beneath the ancient trees, keeping the future bright,
We have felt the climate shift before you knew its name,
We see the spark in every beast, no two are quite the same!

So, wake before the sun departs; see the wisdom we possess.
Open your hearts to our wandering path-accept us, nothing less……
Accept us, nothing less……

Rekha Sharma, Shalini Yadav, Sushma Pandey, Sonika Ahlawat, Reena Arora, NH Mohan
Organization: ICAR-National Bureau of Animal Genetic Resources (NBAGR), Karnal
Copyright@ICAR-NBAGR